वनवास की पावन यात्रा

- लेखक : DAKSHIN KOSAL TODAY DESK
- तारीख : May 29, 2026

भगवान श्रीराम का वनवास केवल राज्याधिकार का त्याग या कोई निर्वासन नहीं था। यह तो सम्पूर्ण मानवता के समक्ष प्रेम, भक्ति और समरसता के आदर्शों की स्थापना का एक महत्तर अभियान था। ईशा सिन्हा जी ने अपने इस लेख में श्रीराम की पावन वनवास यात्रा का अत्यन्त भावपूर्ण और प्रेरणादायी चित्र खींचा है। लेखिका का यही कथ्य है कि गंगा तट पर केवट का निश्छल समर्पण हो या पम्पा सरोवर पर शबरी की भक्ति, प्रभु श्रीराम ने सर्वत्र यही सन्देश दिया है कि सच्ची भक्ति किसी जाति, वर्ण या ऐश्वर्य की दास नहीं होती। यह लेख हमें दिखाता है कि श्रीराम ने किस प्रकार वनवासी जीवन को अंगीकार किया और समाज के अन्तिम व्यक्ति तक की मनोभूमि को अपनी आत्मीयता सींचकर जन-जन के हृदयों पर अपना अमर साम्राज्य स्थापित किया।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस के माध्यम से भगवान श्रीराम के जीवन को एक ऐसा आध्यात्मिक महाकाव्य रूप प्रदान किया है, जो न केवल एक धार्मिक ग्रन्थ है, अपितु मानव जीवन के महान आदर्शों का एक शाश्वत दर्पण भी है। वनवास का काल श्रीराम के जीवन का वह स्वर्णिम अध्याय है, जिसमें उन्होंने उत्तर से दक्षिण तक की लम्बी यात्रा की।

यह यात्रा मात्र भौगोलिक परिवर्तन नहीं थी, अपितु जन जन के हृदयों को जीतने वाली एक पावन लीला यात्रा थी। अयोध्या से प्रस्थान कर चित्रकूट, प्रयाग, गंगा तट, दंडकारण्य होते हुए पम्पा सरोवर तक यह यात्रा अनवरत चली। इस यात्रा में श्रीराम ने अनेक लीलाएं रचीं, जिन्होंने जन मन में अपना स्थायी घर बना लिया।

गंगा तट पर निषादराज और केवट का स्नेह, भरद्वाज आश्रम की भक्ति, और शबरी की भक्तिमाला ये सभी स्मृतियां आज भी श्रोताओं के हृदय में प्रेम की ज्योति प्रज्वलित करती हैं। इस निबन्ध में हम इसी निश्छल प्रेम और उसकी पावन स्मृतियों पर

केन्द्रित रहेंगे।

श्रीराम का वनवास अयोध्या के राजमहल से निष्कासन के साथ प्रारम्भ होता है। राजा दशरथ के वरदान और माता कैकेयी की हठ ने श्रीराम को 14 वर्ष के वनवास के लिए विवश कर दिया। सीता और लक्ष्मण के साथ वे सरयू तट से प्रस्थित हुए। प्रथम पड़ाव चित्रकूट था, जहां ऋषियों का सत्कार हुआ।

किन्तु भरत के आगमन के पश्चात् उन्होंने चित्रकूट त्याग दिया। अब यात्रा का लक्ष्य दक्षिण दिशा की ओर था। गंगा पार करने के लिए वे प्रयाग पहुंचे, और गंगा तट पर निषादराज गुह के पास ठहरे। यहीं वनवास यात्रा की पहली महान लीला रची गई निषादराज और केवट का प्रेम प्रसंग।

राम के खड़ाऊ बने भरत के मार्गदर्शक

निषादराज गुह एक साधारण नाविक थे, किन्तु उनके हृदय में श्रीराम के प्रति अगाध श्रद्धा थी। जब श्रीराम गंगा तट पर पहुंचे, गुह ने उनका भव्य स्वागत किया। उन्होंने कहा, "प्रभु, मैं आपका दास हूं।" श्रीराम ने गुह को भाई का सम्मान दिया। गुह ने नाव की व्यवस्था की, किन्तु इस प्रसंग का सबसे भावप्रधान क्षण तब आया, जब केवट ने नाव पर चढ़ने से पूर्व श्रीराम के चरण धोए।

केवट ने कहा, "प्रभु, गंगा माता की भक्ति से संसार सागर से पार उतरा जाता है, किन्तु आपके चरणों का स्पर्श तो स्वयं अमृत है।" यह निश्छल प्रेम था जो जाति, कुल, धन आदि के समस्त भेदों से परे था। केवट ने श्रीराम को अपनी नाव में बैठाकर गंगा पार कराया। श्रीराम ने केवट को वरदान दिया कि वह रामराज्य का भागीदार होगा।

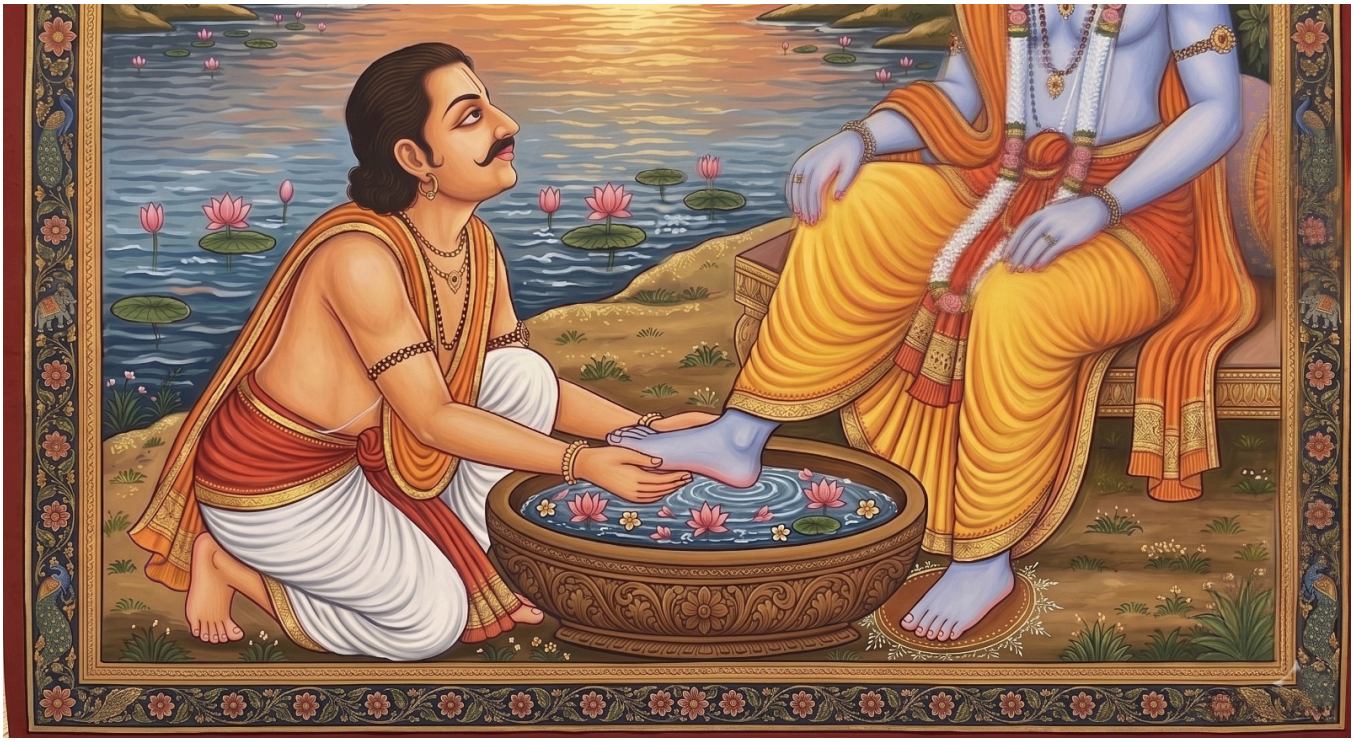

केवट प्रसंग है प्रेम के उच्च स्वरुप का प्रतिमान

यह घटना गंगा तट की एक अमर स्मृति है। आज भी श्रद्धालु उस पावन स्थान को 'रामघाट' कहते हैं, जहां यह अद्भुत प्रसंग हुआ। इसे पता चलता है कि भक्ति का एकमात्र आधार हृदय की शुद्धता है। निषादराज और केवट की भक्ति ने श्रीराम को अपना बना लिया, और श्रीराम ने उनके हृदय को अपना निवास।

गंगा पार करने के पश्चात् श्रीराम प्रयाग पहुंचे, जहां महर्षि भरद्वाज ने उनका स्वागत किया। भरद्वाज जी की भक्ति असीम थी। उन्होंने श्रीराम से निवेदन किया कि वे चित्रकूट के समीप प्रयाग के पास ही विराजें। श्रीराम ने प्रसन्न होकर एक पावन स्थान चुना।

भरद्वाज जी ने कहा, "प्रभु, आपके दर्शन से मेरा तप सफल हो गया।" श्रीराम ने उन्हें गले लगाया। यह स्थान आज भी 'रामघाट प्रयागराज' के रूप में विख्यात है। यहां की स्मृति यह बताती है कि परम ज्ञानी ऋषि भी राम के प्रेम में पूर्णतः लीन हो जाते हैं।

वनवास यात्रा आगे बढ़ी। श्रीराम दंडकारण्य की ओर चले। यहां शरभंग, सुतीक्ष्ण, और अगस्त्य आदि ऋषियों का सत्कार हुआ। अगस्त्य ऋषि ने उन्हें पंचजन्य नामक स्थान पर भेजा। किन्तु दंडकारण्य की सबसे मार्मिक लीला शूर्पणखा प्रसंग है। रावण की बहन शूर्पणखा ने श्रीराम को देखा तो वह उन पर मोहित हो गई।

किन्तु श्रीराम ने धर्म का पालन करते हुए लक्ष्मण को उचित आदेश दिया। यह घटना वनवास की लीला का एक महत्त्वपूर्ण अंग बनी, जिसने लंका विजय का आधार तैयार किया। दंडकारण्य से होते हुए श्रीराम पम्पा सरोवर पहुंचे। यहां की स्मृति शबरी के बिना पूर्णतः अधूरी है। पम्पा के तट पर शबरी की कुटिया राम भक्ति का परम प्रतीक है। शबरी एक वनवासी भीलनी थीं, जो समाज में उपेक्षित थीं, किन्तु वे मतंग ऋषि की परम शिष्या थीं।

शबरी प्रसंग है गुरुवाणी पर अटल विश्वास का प्रतीक

उन्होंने अनेक वर्षों तक कठोर तपस्या की। जब श्रीराम पहुंचे, शबरी ने मीठे बेर चख कर प्रभु को अर्पित किए। उन्होंने कहा, "प्रभु, मैंने इन्हें आपके स्वाद के लिए ही चुना है।" श्रीराम ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा, "माता, तुम्हारी भक्ति अमर है।" शबरी ने प्रभु को पम्पा का दर्शन कराया। यह प्रेम इतना निश्छल था कि इसने लौकिक जाति और धर्म की समस्त सीमाएं तोड़ दीं।

शबरी की यह लीला रामचरितमानस में भक्ति का चरम शिखर कहलाती है। पम्पा सरोवर आज भी एक पावन तीर्थ है, जहां भक्त शबरी आश्रम जाकर राम की स्मृति में लीन हो जाते हैं। श्रीराम की इस यात्रा में अनेक अन्य लीलाएं भी घटीं। किष्किन्धा में सुग्रीव से मित्रता, हनुमान जी की अनन्य भक्ति, सीता हरण के पश्चात् वानर सेना का संगठन ये सभी दक्षिण यात्रा के ही अंग हैं।

किन्तु इस सम्पूर्ण यात्रा का केन्द्र केवल निश्छल प्रेम ही रहा। श्रीराम ने उत्तर के निषादराज और केवट से लेकर दक्षिण की शबरी तक सभी को पूर्णतः अपना बनाया। उनका प्रेम अत्यन्त विनम्र, और करुणामय था। वे राजकुमार होते हुए भी दासों के दास और भक्तों के सेवक बने। यह यात्रा मात्र 14 वर्ष की नहीं, अपितु अनन्त काल की है, क्योंकि ये स्मृतियां अमर हैं।

आज के सन्दर्भ में ये स्मृतियां हमें क्या सिखाती हैं। आधुनिक युग में जहां सर्वत्र स्वार्थ और भेद भाव व्याप्त है, श्रीराम का यह प्रेम हमें सिखाता है कि केवल निश्छल भक्ति और आत्मीयता से ही जन जन के हृदय जीते जा सकते हैं। गंगा तट का केवट आज भी यह सन्देश देता है कि भक्ति में कोई बन्धन नहीं होता। शबरी की कुटिया स्पष्ट रूप से यह उद्घोष करती है कि शुद्ध भाव ही सच्ची भक्ति है।

राम के प्रसंग गढ़ते हैं निश्छल प्रेम की परिभाषा

रामराज्य का महान स्वप्न इसी पावन प्रेम पर आधारित था। वनवास की इस यात्रा ने सम्पूर्ण भारतवर्ष के जन मन में राम का शाश्वत घर बसा दिया। गोस्वामी तुलसीदास जी ने सत्य ही लिखा है: *रामचरित सुनि मन प्रिय लागा। जेहि विधि प्रभु प्रगटेउ जग मांहि।।*

अर्थात् प्रभु की ये लीलाएं सुनकर मन अत्यन्त हर्षित होता है।

इस प्रकार, श्रीराम के वनवास की यह यात्रा उत्तर से दक्षिण तक प्रेम की एक महान यात्रा थी। निषादराज, केवट, भरद्वाज, और शबरी सभी की स्मृतियां आज भी भारतीय जनमानस में पूर्णतः जीवन्त हैं। ये पावन स्मृतियां हमें निरन्तर प्रेरित करती हैं कि केवल आत्मीय प्रेम से ही सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार बनाया जा सकता है। राम नाम जपते हुए यदि हम भी इसी 'दृष्टि की समग्रता' के मार्ग पर चलें, तो सम्पूर्ण जीवन पावन हो जाएगा।

जय सियाराम।।

-ईशा सिन्हा
(लेखिका मुंबई में कक्षा ग्यारहवीं की प्रतिभावान छात्रा व युवा रचनाकार हैं, जो अपनी लेखनी से समसामयिक विषयों और सांस्कृतिक विषयों पर लिखने में विशेष रूचि रखती हैं।)